आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2402 • उदयपुर, गुरुवार 22 जुलाई, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्

सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

चोखली के घर पहुंचाई राशन सामग्री, टूटे टापरे पर बांधा तिरपाल

भींडर पंचायत समिति की बगड़ ग्राम पंचायत के गांव विलकावास की चोखली बाई को नारायण सेवा संस्थान ने जीवनयापन सम्बन्धी सहायता दी। गौरतलब है कि चोखली के पति ने दूसरी शादी कर ली थी। जिसके बाद वह पति के घर से मायके आ गई। करीब पांच वर्ष पूर्व पिता और मां की मृत्यु हो गई, जिससे वह गरीबी हालत पर अकेले ही जीवन यापन कर रही है। कई दानदाताओं ने चोखली को खाद्य सामग्री की सहायता पहुंचाई।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि निदेशक वंदना जी अग्रवाल और टीम को उसके घर भेजा गया, जहां उसके टापरे पर त्रिपाल बांधा गया और दो माह का राशन, पहनने और ओढ़ने–बिछाने के वस्त्र प्रदान किए गए।

आशियाना फिर बसा
मदद को तरसती पत्नी और मासूमों को नारायण सेवा ने संभाला

उदयपुर जिले के आदिवासी बहुल जोर जी का खेडा निवासी मीना (बदला हुआ नाम) का पति अहमदाबाद में नमकीन की दुकान पर काम करता था। कोरोना की दूसरी लहर में खराब तबीयत के चलते वो गांव आया और दो दिन बाद मृत्यु हो गई। एक तरफ पत्नी पति की मौत से दुःखी थी तो दूसरी तरफ तीन बेटियों और वृद्ध सासू मां की चिंता भी उसे सता रही थी। असमय मौत से असहाय परिवार के घर में न आटा था न दाल और न ही पैसा भोजन को मोहताज परिवार पर ताउते तूफान का कहर भी ऐसा बरपा की टूटी– फूटी छत भी उड़ गई। परिवार के पांचों जन ने बारिश में रातें गुजारी तो बाद में तेज धूप में तपने को मजबूर हो गए।

नारायण सेवा संस्थान ने ली सुध

संस्थान की आदिवासी क्षेत्रों में राशन बांटने वाली टीम को पता चला तो वे वहां पहुंचे। दुःखी परिवार को ढ़ाढस बंधाते हुए मदद के लिये हाथ बढ़ाया।

हर माह मिलेगा राशन

मृतक मजदूर परिवार को संस्थान ने मौके पर ही महीने भर का आटा, चावल, तेल, शक्कर, चाय, दाल, और मसाले दिए। हर माह इस परिवार को राशन दिया जाता रहेगा।

संस्थान बनाएगा पक्की छत –

घर की छत का निर्माण भी संस्थान द्वारा करवा लिया गया। जब बरसात के दिनों में उसे तकलीफ नहीं होगी।

सेवा–जगत्

दिव्यांगों को समर्पित- आपका अपना नारायण सेवा संस्थान

संस्थान द्वारा आगरा में 32 राशन किट वितरण

नारायण सेवा संस्थान द्वारा असहाय, दिव्यांग, मूक बधिर, एवं दूसरी लहर कोरोना महामारी के चलते बेरोजगार हुए गरीब कामगारों को बल्केश्वर मंदिर परिसर, आगरा में निःशुल्क राशन का वितरण 04 जुलाई 2021 को किया गया।

संस्थान द्वारा भारतवर्ष में 50000 परिवारों को राशन निःशुल्क दिया जा रहा है। आगरा शिविर के अंतर्गत 32 गरीब परिवारों को निःशुल्क राशन दिया गया।

शिविर प्रभारी मुकेश जी शर्मा ने बताया मुख्य अतिथि श्रीमान् हरिओम जी गोयल एवं श्रीमान विमल जी गुप्ता, श्रीमान् महेश जी जौहरी, श्रीमान् नरेन्द्र जी (थाना प्रभारी, कमलानगर), श्री राजकुमार जी गोयल, श्री लोकेश जी गोस्वामी, श्रीमान् अभिषेक जी गोस्वामी, श्रीमान् योगेश जी गोस्वामी, आदि गणमान्य मेहमान उपस्थित थे। शिविर प्रभारी ने बताया कि संस्थान 36 वर्षो से निःस्वार्थ सेवा कर रहा है। इस वर्ष कोरोना काल में संस्थान घर–घर भोजन सेवा, ऑक्सीजन सिलेंडर, एम्बुलेंस सेवा, कोरोना किट, निःशुल्क हाइड्रोलिक बेड भी उपलब्ध करवाने का संकल्प लिया इस दौरान हजारों कोरोना संक्रमितों को निःशुल्क सेवा उपलब्ध करवायी जा रही है।

संस्थान ने ऐसे जरूरतमंदों के लिए नारायण गरीब परिवारों तक राशन पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसी क्रम में उदयपुर शहर के विभिन्न आदिवासी क्षेत्र में शिविर लगाकर निःशुल्क राशन वितरण किया जा रहा है। प्रत्येक किट में 15 किलो आटा, 5 किलो चावल, 4 किलो दाल, 2 किलो तेल, 2किलो शक्कर, 1 किलो नमक एवं आवश्यक मसाले दिए गए। पूरी टीम ने चयनित परिवारों को राशन वितरण में सहयोग प्रदान किया।

नारायण सेवा संस्थान के सहयोग से
जशोदा को दिव्यांगता से मिली निजात

उत्तरप्रदेश के मुरादाबाद जिले में लाईट फिटिंग का कार्य कर परिवार का भरण–भोशण करने वाले राजेन्द्र प्रसाद की बेटी जशोदा जब 12 साल की थी, एक दिन बुखार आया जो उसे पोलियो का दंश देकर ही गया।

गरीब माता–पिता के लिए परिवार का भरण–पोषण ही मुश्किल हो रहा था और अब यह आसमान टूट पड़ा। विकलांगता के चलते बच्ची के अनिश्चित भविष्य पर मां–बाप के लिए सिवाय आंसू बहाने के कुछ भी न था। उम्र के साथ जशोदा की परेशानियां बढ़ती गई।

बिना सहारे शरीर को संभालना उसके बस में न था। माता–पिता ने कर्ज लेकर उसके इलाज की हर संभव कोशिश की लेकिन डॉक्टरों के अनुसार स्थिति में सुधार का एक मात्र विकल्प ऑपरेशन था, जिसमें खर्च का जुगाड़ परिवार के पास नहीं था।

जशोदा को भी अब दिव्यांगता से छुटकारे की उम्मीद भी नहीं रही। कहते हैं कि जब सब तरफ अंधेरा होता है तब प्रकाश की कोई हल्की सी किरण दिखाई भी दे जाती है। टेलिविजन चैनल के माध्यम से परिवार को नारायण सेवा संस्थान में पोलियो के निःशुल्क ऑपरेशन की जानकारी मिली।

माता–पिता जशोदा को लेकर उदयपुर आए। उसके पालियोग्रस्त पांव का संस्थान के आर.एल. डिडवानिया हॉस्पीटल में पहला ऑपरेशन हुआ। एक पैर बिल्कुल मुड़ा होने और पीठ में ट्यूमर होने के कारण 7 ऑपरेशन और 9 माह आई.सी. में रहने के बाद और जांघ की चमड़ी को पैर के पंजे पर लगाई तब वो पैर पर खड़ी हुई।

सहारा लेकर चलने वाली जशोदा अब कैलीपर के सहारे के चलती हैं। जशोदा ने संस्थान में ही रहकर 3 माह का सिलाई प्रशिक्षण भी लिया। बी.ए. अंतिम वर्ष की छात्रा जशोदा संस्थान के सिलाई केन्द्र में रोजगार पाकर खुश है।

संस्थान को मिला एक दिव्यांग का आशीर्वाद

पिन्टू, उम्र–18 वर्ष पिता–श्री सुन्दर सिंह, गांव– मनाना, जिला–पानीपत (हरियाणा)

परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यन्त खराब थी। पिताजी मजदूरी करके किसी तरह सात सदस्य के परिवार का भरण–पोषण कर रहे हैं। दो साल की उम्र में तेज बुखार हुआ और टीका लगाने पर पोलियो हो गया, जिससे पांव सिकुड़ गया। इस तरह मेरा चलना फिरना बाधित हो गया और जीवन पशु की तरह हो गया।

ज्यों–ज्यों समझ आने लगी मैं अपनी दिव्यांगता के कष्ट से दुःखी रहने लगा। एक दो जगह दिखाया भी, परन्तु परिवार में कोई भी शिक्षित नहीं है, अतः इलाज की जानकारी या इलाज करवाने का विचार ही नहीं आया। गांव में ही देशी इलाज करने वाले एक–दो चिकित्सकों को दिखाया पर कोई सुधार नहीं हुआ।

गांव के निकट मेरे एक रिश्तेदार श्री राधेश्याम जी ने मुझे संस्थान के बारे में बताया जिन्हें भी पोलियो था और संस्थान में चार ऑपरेशन के बाद वे पूरी तरह ठीक हो गये। उनकी राय के अनुसार मैं यहां आया और जांच के बाद डॉ. सा. ने कहा कि ऑपरेशन के बाद मैं ठीक हो जाऊंगा और आराम से चल–फिर सकूंगा। मैं यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। जीवन के प्रति नई उम्मीद जगी। मेरे पांव का ऑपरेशन हुआ। अब मैं केलिपर्स की सहायता से सामान्य व्यक्ति की तरह चल–फिर सकता हूँ। संस्थान ने मुझे जैसे असहाय को नया जीवन दिया है। मैं संस्थान के सभी भाई– बहनों के प्रति बहुत आभारी हूँ और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी सेवा के बदले में भगवान उन्हें धन–वैभव और सुखशांति दे।

नारायण सेवा संस्थान ने दी जीवन में खुशियां

* मैं ज्योति पिता चमरूराम छत्तीसगढ़ की रहने वाली हूँ मैं एक कम्प्युटर टीचर हूँ और एम. कॉम, करना चाहती हूँ । मैं जब पांच साल की थी तो मुझे बुखार आया और मेरा पैर पोलियोग्रस्त हो गया। मैं पैर पर झुककर चलने लगी।

इसी कारण मेरा स्कूल में मजाक उड़ाया जाता था। सहपाठी मुझसे भेदभाव करने लगे। इससे मुझे काफी दुःख होता था। रात भर मैं रोती रहती थी। फिर एक दिन मैंने आस्था चैनल पर देखा कि "नारायण सेवा संस्थान" मैं मुझे जैसे कई बच्चों का इलाज निःशुल्क किया जा रहा था।

पेशेन्ट खुश होकर अपने सही होने की खुशी जाहिर कर रहे थे। मैंने सोचा कि मुझे भी जाना चाहिए ताकि मैं भी ठीक होकर मेरा मजाक उड़ाने वालों को जवाब दे सकूं। मगर घर वाले जाने नहीं देना चाहते थे। मेरा भाई पवन मुझे उदयपुर ले जाने को तैयार हो गया। वह अपनी होमगार्ड आरक्षक पुलिस की नौकरी छोड़ और मुझे लेकर आया।

मुझे डॉ. साहब ने देखा ऑपरेशन के लिए कहा मगर पेशेन्ट की अधिकता होने कारण मुझे वेटिंग डेट मिली। मैं वापस आई और मेरा ऑपरेशन हुआ और कुछ दिन बाद मुझे डॉ. ने कैलिपर्स दे दिया। आज मैं केलिपर्स के सहारे खड़ी हो गई हूँ । मैं इतनी खुश हूँ मानो मुझे जिन्दगी में पहली खुशी आज मिली है। मैं धन्यवाद देती हूँ नारायण सेवा संस्थान को जिन्होंने मुझे खड़ा किया।

** शब्बीर हुसैन के परिवार में छह सदस्य है। पिता जी कॉस्मेटीक की दुकान चलाते है। जन्म के डेढ़ वर्ष बाद अचानक तेज बुखार से शब्बीर बेहोश हो गया। और होश आने पर उसने पाया कि उसके पांव पूरी तरह बेजान हो चुके थे। पूरा शरीर निष्क्रिय हो चुका था । श्री गुलाम मोहम्मद पिता ने शब्बीर को श्री नगर के एक अस्पताल में दिखाया तो डॉक्टर ने बताया कि शब्बीर को पेरेलाइसिस हो चुका है इसका कोई इलाज नहीं है। गुलाम मोहम्मद ने शब्बीर को अन्य कई अस्पतालों में दिखाया लेकिन कहीं से भी आशाजनक उत्तर न मिलने पर गुलाम मोहम्मद टूट से गये।

एक दिन टी.वी. पर नारायण सेवा संस्थान का कार्यक्रम देखकर गुलाम मोहम्मद के दिल में शब्बीर के पांवों पर चलने की उम्मीद जागने लगी।

कुछ दिन कार्यक्रम देखने के पश्चात् उन्होंने संस्थान में फोन किया और संस्थान से सकारात्मक उत्तर पाकर गुलाम मोहम्मद अपने पुत्र शब्बीर को लेकर नारायण सेवा संस्थान में आये। और शब्बीर के पांवों के दो सफल ऑपरेशन हुए शब्बीर के पांवों में नई जान आने लगी। ऑपरेशन से पूर्व शब्बीर की टांगे टेढ़ी थी। वह चलने – फिरने में बिल्कुल ही असमर्थ था। ऑपरेशन के बाद शब्बीर सामान्य रूप से अपने पांवों पर खड़ा होकर चलने लगा है। शब्बीर जैसे ओर भी कई दिव्यांग – बंधु जिनका जीवन घर की चार दीवारी तक ही सिमट कर रहा गया है, उन्हें अपने पांवों पर खड़ा कर जीवन की मुख्यधारा में शामिल करने का सफल प्रयास नारायण सेवा संस्थान कर रहा है। संस्थान के ये सफल प्रयास आपके द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से ही सम्भव हो पा रहे हैं।

*** उत्तरप्रदेश के कुशीनगर जिले के एक छोटे से गॉव पिपराबाजार के रहने वाले औरंगजेब अली की महज 12 वर्ष की बेटी जूही फातिमा जो जन्म से ही पोलियो ग्रस्त होने के कारण दोनों पैर से दिव्यांगता का दंश लिए जिंदगी को काट रही थी। जूही के जन्म से ही दोनों पैर मुड़े हुऐ थे। जूही का कहना है कि मैं सोचती थी कि क्या मैं अपने पैरो पर चल पाऊंगी? परिवार वालों की जिदंगी में जूही की दिव्यांगता के कारण बड़ा दुःख था। जूही के दादाजी कंधों पर उठा कर स्कूल लेकर जाते थे। बच्चों को खेलते हुए देखती तो मन में सोचती थी कि मैं कब इन बच्चों की तरह खेलूंगी ? जो भी मुझे देखता वो यही सोचता इतनी प्यारी और मासूम बेटी को खुदा ने ये कैसा कष्ट दिया। टी.वी. चैनल के माध्यम से सेवा के सबसे बड़े महातीर्थ नारायण सेवा संस्थान का पता चला तो सीधे नारायण सेवा संस्थान में पंहुचे।

जूही अपने दादा मोहम्मद खलिल के साथ संस्थान में पहली बार उदयपुर आई और डॉ. ने जांच के बाद दोनों पैरों का ऑपरेशन किया। दोनों पैरों के 2 ऑपरेशन और 17 बिंजिग होने के बाद ऐसा लगा मानो जूही की जिदंगी सात रगों के खुशी से भर गई, और वह अपने दोनों पैरो पर चलने लगी। अब पूरे परिवार में खुशियों का कोई ठिकाना नहीं रहा। जूही ने कहा कि मैं मुस्लिम परिवार की बेटी होने के बाद भी मैंने चैत्र नवरात्रि में कन्या पूजन में भाग लिया और हर धर्म के व्यक्ति के साथ हिन्दू रीति रिवाज से पूजा की। जूही ने संस्थान से जुड़कर दिव्यांग भाई–बहनों को दिव्यांगता की जिन्दगी से छुटकारा दिलाने में हर काम करने का संकल्प लिया।

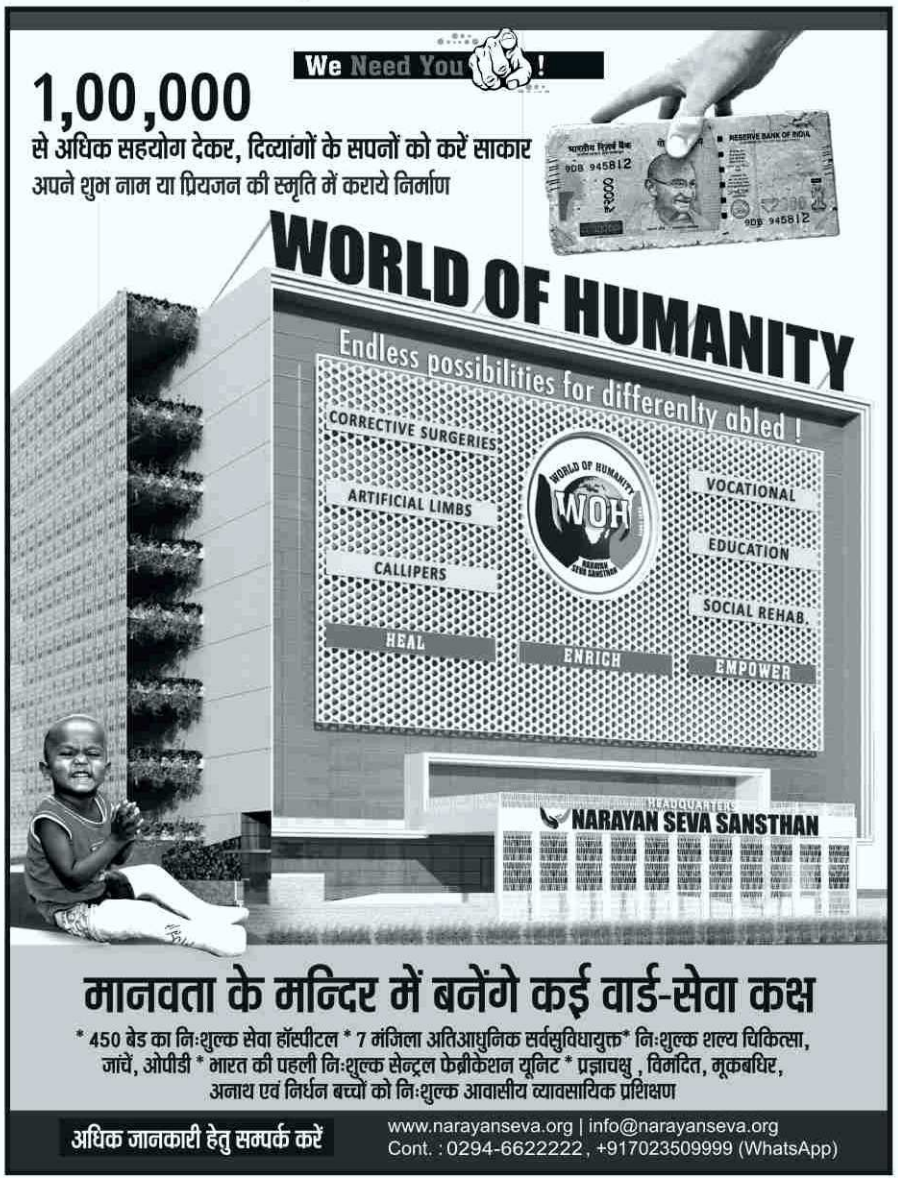

सर्व स्वीकार्यता

स्वामी विवेकानंद विदेश यात्रा पर थे। जहां वे ठहरे हुए थे, वहां कई विदेशी उनसे मिलने पहुंचते थे। एक दिन एक गोरे पति–पत्नी स्वामीजी से मिलने पहुंचे। पति–पत्नी स्वामीजी से बहुत प्रभावित थे और उनके भक्त भी थे। गोरे पति–पत्नी ने स्वामीजी से मिलने के लिए समय मांगा। उस समय स्वामीजी के आसपास कुछ बच्चे खेल रहे थे। पति–पत्नी ने स्वामीजी से कहा, हमारी कोई संतान नहीं है। हमें भरोसा है कि अगर आप हमें आशीर्वाद दे दें या कोई चमत्कार कर दें तो हमारे यहां बच्चा हो जाएगा।

वे लोग विदेशी थे, लेकिन उन्हें भारतीय संस्कृति की जानकारी थी। उन्हें कई साधु–संतों की कथाएं मालूम थीं। उन्होंने कहा, श्स्वामीजी हमने सुना है कि साधु–संत आशीर्वाद देते हैं तो लोगों के यहां संतान हो जाती हैं। आप हमें आशीर्वाद दीजिए कि हमारे घर संतान आ जाए।

स्वामीजी ने मुस्कान के साथ कहा, आपको संतान चाहिए?

पति–पत्नी बोले, हां।

स्वामीजी ने कहा, मेरे माध्यम से चाहिए?

दंपत्ति ने कहा, हां, अगर आपके माध्यम से संतान मिलेगी तो वह योग्य होगी। हम और ज्यादा प्रसन्न हो जाएंगे।

विवेकानंदजी ने कहा, अगर मैं संतान दूं तो उसे स्वीकार करोगे?

दोनों स्वामीजी के भक्त थे, उन्होंने कहा, आप जो संतान देंगे, हम उसे जरूर स्वीकार करेंगे। स्वामीजी ने वहीं खेल रहे एक अनाथ निग्रो बच्चे को उठाया और उसका हाथ पति–पत्नी के हाथ में दिया और कहा, आज से ये बच्चा आपका। यही मेरा आशीर्वाद है। उस गोरे दंपत्ति ने स्वामीजी द्वारा दिए गए बच्चे को स्वीकार किया और उसका पालन करने की जिम्मेदारी संभाल ली।

सम्पादकीय

संघर्ष जीवन की विशिष्ट योग्यता है। जो भी व्यक्ति शून्य से खड़े होकर शिखर तक पहुँचे हैं, उसके मूल में उनकी संघर्षवृत्ति ही रही है। पर संघर्ष किससे ? यह समझ लेना भी बहुत आवश्यक है। कहा जाता है कि कुछ भी पाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है, इसका आशय यह नहीं है कि संघर्ष करके हम दूसरों का भाग ले लें। संघर्ष से तात्पर्य होता है विपरीत परिस्थितियों में भी अपने मंतव्य पर डटे रहना। ये विपरीत परिस्थितियां कई प्रकार की हो सकती हैं।

हम चाहते हैं कोई बड़ा 'स्टार्ट अप' करना पर पूँजी है नहीं। कोई भी हमें ऋण देने वाला भी नहीं है तो संघर्ष प्रारंभ। हम चाहते हैं अपने आपको समाज में स्थापित करना पर हमारे घरवाले कोई भी 'रिस्क' लेने को तैयार नहीं। हम चाहते हैं किसी भी क्षेत्र में अपनी दक्षता के आधार पर स्वयं को प्रमाणित करना पर जो पहले से आरूढ़ हैं वे हमें किसी भी तरह उभरने ही नहीं देते। हम चाहते हैं अपने सपनों को साकार करना पर आसपास के लोग खिल्ली उड़ाकर हतोत्साहित करने से नहीं चूकते। पर ये बाधाएं यदि हम संकल्पित मन के बल से, अपने अरमानों के अनुमोदन से पूर्ण करने की ठान लेते हैं, वही संघर्ष है। और जीवन में बिना संघर्ष केवल विरासत वाले ही जी पाये हैं वरना तो हरेक को संघर्ष करना ही होता है।

कुछ काव्यमय

उज्ज्वल भावी के लिये,
करो सदा संघर्ष।
बिन संघर्षों के नहीं,
हो सकता उत्कर्ष।।
लड़ने ही होंगे यहाँ,
अपने अपने युद्ध।
अनपढ़ या सामान्य हों,
चाहे बनो प्रबुद्ध।।
जो जीवन के युद्ध से,
करें पलायन आज।
असफलता तैयार है,
पड़े ओढ़ना लाज।।
जो भी मंजिल पा गया,
बिना किये घमसान।
वो जीवन भर बन रहा,
अनुभव में नादान।।
संघर्षों से ही मिला,
अनुभव का आनन्द।
अनुभव पर ही टिक रहा,
सार सही प्रबन्ध।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

परोपकार, पवित्रता, करुणा

पढ़ने में आया था – महाराणा रणजीत सिंह जी एक बार अपने साथियों के साथ जब कहीं भ्रमण पर जा रहे थे, कि अचानक एक ढेला उनके कन्धे पर आकर लगा। तुरंत सैनिक दौड़ पड़े, और एक बुढ़िया को पकड़ लाये जो दंड की आशंका से थर–थर काँप रही थी। रोती हुई सी हाथ जोड़े उस मांई ने बताया –महाराज जी ! मैंने तो आम तोड़ने के लिए वृक्ष पर पत्थर मारा था। गजब हो गया–आपके लग गया। अब जो भी दंड.....।

दयालु महाराज ने राज्य कोष से उसके घर पर जीवन यापन का सामान भिजवाया। आश्चर्यचकित से हुए अपने दरबारियों को कहा –"देखो भाई ! जब एक वृक्ष भी ढ़ेला मरने पर अपने प्राणतत्त्व युक्त मीठा फल प्रदान कर देता है, तो फिर मैं तो मानव हूँ.....

और फिर उस बेचारी मांई ने जानबूझ कर तो नहीं मारा था न ?"

है नहीं मुमकिन कि जीते,
शक्ति से एक व्यक्ति भी।
प्यार के दो बोल बोलो,
चाहो तो दुनियां जीत लो।।

बहुत सरल है प्यार बढ़ाना –घृणा बढ़ाना अवश्य कठिन है। क्योंकि वह मानव के स्वाभाविक गुण के विपरीत है, और फिर हमारे इस प्रिय भारत देश में तो पूरी थाती है प्रेम, त्याग, सेवा, परोपकार, दयालुता व उदारता आदि की।

हजारों महापुरुषों के जीवन्त उदाहरण हैं जिन्होंने इन्हीं गुणों से पूरे विश्व को अमर धरोहरें प्रदान की है– तिल–तिल जल कर... क्षण–क्षण जी कर।

क्या सुन्दर कहा एक कवि ने :–

ईश्वर को नापसंद है,
शक्ति जुबान में।
इसलिए तो नहीं दी है,
हड्डी जुबान में।।

आइए बन्धुओं मजबूत करें नारायण सेवा को अर्थात परोपकार के रचनात्मक कार्यों को।

ताकत दें सेवा के मन को अर्थात सात्त्विक विचारों के प्रसार को, और दुंदुभी बजा दें –प्यार की पवित्रता की करुणा व स्नेह की।

–कैलाश 'मानव'

अनूठी सेवा

जीवन के इस छोटे से सफर में हम अपना जीवन संवारने में सारा जीवन व्यतीत कर देते हैं। क्या हम दूसरों के लिये सोच पाते हैं ? क्या हमने कभी सोचा कि एक अपाहिज अपनी दिव्यांगता से ऊपर उठकर जीवन को कैसे संवार पायेगा। ये शब्द है उस प्रखर व्यक्ति के जिसने जन–जन के सामने दिव्यांगता को ऊपर उठाने का वो अनूठा उदाहरण पेश किया जो किसी बड़ी प्रेरणा से कम नहीं उस व्यक्तित्व का नाम है मोहन श्याम अग्रवाल।

मोहन श्याम अग्रवाल एक फैक्ट्री में काम करते हैं। वहीं पास में उनका एक मित्र एक बंगले में नौकरी किया करता था। मोहनश्याम अक्सर उनसे मिलने जाया करते थे। एक दिन सहसा उनकी दृष्टि एक दिव्यांग लड़की पर पड़ी। "रूप सौन्दर्य से परिपूर्ण, पांव से दिव्यांग" देखकर मोहनश्याम अग्रवाल के हृदय में अनेक भाव उमड़ने लगे और फैसला किया उसके माता–पिता से मिलने का। मोहन श्याम ने उस दिव्यांग लड़की से शादी का प्रस्ताव रखा। तब उस लड़की के पापा ने कहा– "इस अपाहिज लड़की से शादी करके क्या करोगे?" तब दृढ़ इरादे वाले उस व्यक्ति का उत्तर था– "मैं किसी अच्छी लड़की से शादी करूं और बाद में वह अपाहिज हो जाये तो मैं उसे छोड़ दूंगा।" लड़की के पिता का उत्तर था– नहीं। मोहनश्याम ने कहा कि अच्छी लड़की से शादी करके तो सभी सुख का अनुभव करते हैं पर एक दिव्यांग हृदय की अन्तर्पीड़ा को समझने वाले बिरले ही होते हैं। मोहनश्याम की बातें सुनकर, उस पिता की आँखों से आँसू छलक पड़े और पिता ने अपनी बेटी की शादी मोहनश्याम के साथ धूमधाम से कर दी।

उनकी शादी को 10 वर्ष हो चुके हैं। उस दिव्यांग लड़की का नारायण सेवा संस्थान में ऑपरेशन हुआ और वह चलने लगी अपने पांव .....आज वे पति–पत्नी बहुत खुश है। उनके एक पुत्र एवं एक पुत्री है और सभी सुखमय जीवन बीता रहे हैं।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

अगले दिन कैलाश वापस उस वृद्ध के पास गया तो वह अत्यन्त प्रसन्न नजर आया। कैलाश को देखते ही अति उत्साह से उसने बताया कि अनपढ़ होने के बावजूद पुस्तक को पढ़ने में इतना मजा आया कि रात को दो बजे तक वह पुस्तक पढ़ते हुए सीता–राम, सीता–राम बोलता रहा। वृद्ध का उत्साह देखकर कैलाश को अचानक अपने बचपन की एक घटना याद आ गई। वह छोटा था तब अपने माता–पिता के साथ भीण्डर में रहता था। तब एक रामाजी कुम्हार हुआ करते थे। कैलाश के पिता ने बताया कि इसके रोम रोम में राम निकलता है। कैलाश को अपने पिता की बात पर यकीन नहीं हुआ तो उसने स्वयं वास्तविकता जानने की कोशिश की।

गांव के भीण्डरेश्वर महादेव में दर्शन करने सभी जाते थे। रामाजी कुम्हार भी यहां आते थे। कैलाष भी अपने पिता के साथ इस मंदिर में जाता था।

एक दिन कैलाश रामाजी के पास बैठ गया और सुनने की कोशिश करने लगा कि उनके शरीर से राम राम की आवाज आती है या नहीं। आरती होने लगी, सभी खड़े हो गये तो कैलाश भी रामाजी से चिपक कर खड़ा हो गया। झालर–घन्टों की ध्वनि और आरती के साथ घन्टियों की मधुर स्वर लहरी के बीच ही कैलाश को कहीं से राम–राम के मद्धिम स्वर की आवाज भी आई। आज अस्पताल में इस वृद्ध मरीज के सीता–राम बोलने के उत्साह के साथ ही कैलाश सोचने लगा कि यह उसके बाल मन का भ्रम था या रामाजी में सचमुच कोई ऐसा करिश्माई व्यक्तित्व था। जो भी हो भक्ति की महिमा निराली ही है।

अंश - 66

नींबू पानी के स्वास्थ्य लाभ

लोग कहते हैं कि मोटापा घटाना है तो सुबह सुबह नींबू पानी पियो। लेकिन सुबह सवेरे नींबू पानी सिर्फ मोटे ही नहीं बल्कि हर व्यक्ति के लिए जरूरी है जो दिन की शुरूआत ताजगी से करना चाहता है।

दरअसल नींबू ताजगी लाता है और अगर दिन की शुरुआत ही ताजगी भरी हो तो दिन भी ताजा ही बीतेगा। ऐसे में रोज सुबह नींबू पानी का सेवन न सिर्फ आपको तरोताजा रखता है बल्कि इसके ऐसे कई फायदे हैं जिन्हें जानने के बाद आप अपने दिन की शुरुआत नींबू पानी के साथ ही करना चाहेंगे।

जानिए नींबू पानी में ऐसा क्या खास है कि अक्सर डॉक्टर व डायटिशियन दिन की शुरुआत इसी से करने पर जोर देते हैं।

प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाता है– नींबू में एंटीऑक्सीडेंट्स, विटामिन सी आदि बहुत अधिक मात्रा में होते हैं जिससे शरीर की प्रतिरोधी क्षमता बढ़ती है और रोगों व संक्रमणों से आप दूर रहते हैं। इसके अलावा यह श्वास संबंधी रोगों से भी दूर रहता है। इसमें सैपोनिन नामक तत्व होता है जो शरीर को लू से बचाने में मदद करता है।

रक्त साफ करता है – नींबू में मौजूद साइट्रिक और एस्कोर्बिक एसिड रक्त से तमाम तरह के एसिड दूर करता है। यह मेटाबॉलिज्म बढ़ाता है जिससे एसिड बाहर निकलते हैं।

पाचन ठीक रखता है – इसमें लेवनॉयड्स होते हैं जो पाचन तंत्र को ठीक रखते हैं। यही वजह है कि पेट खराब होने पर नींबू पानी पिलाया जाता है। इसमें मौजूद विटामिन सी शरीर में पेप्टिक अल्सर नहीं बनने देता है।

त्वचा को दमकाता है – साफ–सुथरी और दमकती त्वचा के लिए भी यह अच्छा विकल्प है। इसमें मौजूद विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट्स त्वचा की कोशिकाओं को सुरक्षित रखते हैं, दाग हल्के करते हैं और त्वचा को अल्ट्रावॉयलेट किरणों से दूर रखते हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

समाप्त हो गयी पट्टियाँ। टींचर, आयोडीन समाप्त हो गया। कैसे होगा? बस निकल गई? डेढ़ घण्टा तो बहुत भारी पड़ेगा। कैलाशजी, दौड़े–दौड़े कैलाश। ये कैलाश, वो कैलाश, कैलाश मेरा नाम नहीं होता तो राधेलाल हो जाता, श्यामलाल हो जाता। नाम में क्या धरा है? नाम एक पहचान है। मैं दौड़ा– दौड़ा चौराहे पे गया, ट्रकों को हाथ दिया। पाँच–चार ट्रकें रूकी नहीं। बीच सड़क पर जाके खड़ा हो गया। मैं ट्रक को रोकूंगा, किसी न किसी ट्रक में बैठ के पिण्डवाड़ा जल्दी पहुँचना है। बीचों बीच सड़क पे जोर–जोर से हाथ दे रहा हूँ। सोचा यदि कोई तेजी से ट्रक आती हुई मेरे को कुचल जाएगी, क्या मालूम उस समय ध्यान ही नहीं आया। उस समय तो ये ही था कैसे पहुँचूं? दस कदम मेरे से पहले प्रभु की कृपा से एक ट्रक रूकी ब्रेक लगाया बोला– मरना है क्या? बीचों–बीच खड़े हो। मैंने कहा– आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना है। मेरे परिवार वाले एक पिता की सब सन्तान उस नाते अपना ही परिवार हुआ। मैंने कहा– चालीस परिवार वाले घायल पड़े हैं, आप मुझे पिण्डवाड़ा छोड़ देना। अच्छा बैठो–बैठो, अच्छा बीच में सड़क में खड़ा मत होना। कभी हमारा ब्रेक नहीं लगता मान लो, आपको कुचल देता। हाँ, भाई आपकी बड़ी कृपा। आपने ब्रेक लगा दिया–रक्षा की। पिण्डवाड़ा पहुँचे दौड़ता हुआ गया, ट्रक से उतर के सड़क पे। ट्रक उतर गई अन्दरूनी साईड में और देखा भवरसिंह राव का घुटना सूज गया था। सूज के दूगने से ज्यादा बड़ा हो गया था। अन्य घायल लोग भी, एक व्यक्ति की अंगुलियाँ कट गई थी। अंगुलियाँ कट के दूर पड़ी थी। तड़प रहा था खून बहुत निकल रहा था। अरे! कितना कष्ट है इनको? कितना कष्ट है? क्या करें? अरे! गाड़ी रोको, गाड़ी रोको। इधर से गाड़ियाँ जा रही है इनमें ले जावें। इनको सिरोही ले चलो, आप आबूरोड़ की तरफ जा रहे हैं वापस मुड़िये। इन बेचारों के लिये, हमें फुर्सत कहाँ? एक्सीडेन्ट के चक्कर में कौन पड़े? ले जाऐंगे पुलिस वाले, आऐंगे, बयान लेंगे। नाना प्रकार से आना– जाना पड़ेगा। कोई बयान नहीं लेंगे।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 193 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023